दिनांक: 26 अगस्त 2025

12वाँ दीक्षांत समारोह
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना

माननीय श्री नित्यानंद राय,गृह-राज्य मंत्री भारत सरकार का उदबोधन..

आज अति पवित्र और अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम, आईआईटी पटना के 12वाँ वार्षिक दीक्षांत समारोह में उपस्थित, मंच पर आसीन भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री, आदरणीय धर्मेंद्र प्रधान जी; भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री कपड़ा एवं उद्योग, आदरणीय गिरिराज सिंह जी, भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन महामंत्री, आदरणीय बी आर शंकरानंद जी; आईआईटी पटना के निदेशक आदरणीय प्रोफेसर टी एन सिंह जी, सभी आदरणीय शिक्षक वृंद, उपस्थित सभी अति सम्मानीय अभिभावक गण और सभी उपस्थित यहां विद्यार्थी भाइयों बहनों, मीडिया के साथियों, समाज सेवी गण और उपस्थित यहां अन्य शिक्षा प्रेमियों, हम सब जानते हैं कि अनुसंधान केवल एक प्रयोगशाला नहीं होता है और इसको चरितार्थ किया है भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना के 12वीं दीक्षांत समारोह में हम सब यहां उपस्थित हैं और यह डिग्री आपके लिए ज्ञान का प्रमाण है और इसके साथ यह जिम्मेवारी भी जुड़ी हुई है कि आप अपनी शिक्षा को समाज और राष्ट्र कल्याण को कैसे समर्पित करें।

इसी भाव से ही शायद आप लोगों ने शिक्षा ग्रहण के दरमियान अपने गुरुजनों को वचन दिया होगा। प्लेसमेंट के क्षेत्र में भी आईआईटी पटना आज देश के शीर्ष संस्थानों में से एक है। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर युवाओं को आवाहन करते हुए दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता, कर्मयोगी प्रधानमंत्री, भारत के आदरणीय नरेंद्र मोदी जी ने एक आवाहन किया था कि नए इनोवेटिव आइडियाज लेकर लोग आएं।यानी लोग मतलब, आप लोग। उन्हें व्यर्थ ना जाने दें क्योंकि आज का आईडिया आने वाली पीढ़ी के भविष्य बना सकता है।माननीय प्रधानमंत्री जी ने ऐसा आवेदन किया था; और वास्तव में है। देखिए एक आप वैसे केंद्र हैं जहां अगर भारत की जिस विरासत की संस्कृति के संस्कार की बात की गई थी, की गई है।

पूर्व में आदरणीय शंकरानंद जी ने भी बहुत तरीकों से आपको समझाए हैं। देखिए अपने यहां अगर हम भारत के वेदों में, शास्त्रों में, या जाए अपनी पद्धतियों में, तो सबसे अंतिम हमारा जो धेय लक्ष्य होता है मोक्ष का; और मोक्ष के तीन मार्ग है अपने भारत के संस्कारों में - एक ज्ञान का है, एक भक्ति का है, एक कर्म का है। एक किसान अपने कर्म के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सकता है। कोई एक व्यक्ति, जो अच्छा शिक्षा दे सकता है अपने ज्ञान के माध्यम से, ज्ञान प्राप्त कर सकता है और एक भक्ति के माध्यम से कर सकता है।

तीनों अगर कहीं केंद्र व्यवस्थित है तो आईआईटी के हमारे योग्य विद्यार्थियों में है और यहां से पास आउट होने वाले ग्रेजुएट हमारे इन भाइयों बहनों में हैं। जिस पर प्राउड है इस देश को। जब आप अपने ज्ञान के माध्यम से आप देश की सेवा करते हैं। तो उस उसमें भक्ति है, आपका ज्ञान, ज्ञान विशेषज्ञ विशेष रूप से आपके आचरण में है और जब आप किसी भी प्रकार के कंस्ट्रक्शन करेंगे, नया आचार करेंगे, इंफ्रास्ट्रक्चर में हो, जिस भी क्षेत्र में, चाहे ज्ञान, विज्ञान कृषि हो, चाहे केमिकल हो, अंतरिक्ष हो, या कुछ भी हो अब तो चिकित्सा में भी इंजीनियरिंग की बात आ गई है तो आप जहां भी जा सकते हैं आप इतने बड़े तीनों सिद्धांतों के आप पूरक हैं और केंद्र हैं।

इसलिए आप विशेष रूप से भी आदरणीय भी है और देश को आप पर बहुत भरोसा है। ऐसे आप की जिम्मेवारी बहुत है। जिस माता-पिता ने आपको यहां तक पढ़ाने के लिए कितना यत्न किए होंगे। जो वैसे परिवार से होंगे जो सक्षम होंगे तो कहीं ना कहीं उनका भी सामर्थ्य आपमें लगा होगा। लेकिन वैसे भी गरीब परिवार से आप आए होंगे जहां ना जाने माता-पिता ने आपको बताया तो नहीं होगा, बड़े भाई भाबियों ने आपको बताया तो नहीं होगा लेकिन ना जाने कौन-कौन सी कटौती कर आपको कभी अभाव नहीं होने दिया होगा ताकि आपके शिक्षा ग्रहण में कहीं कोई बाधा ना आ पाए। उस परिवार की जिम्मेवारी हैं आप पर।

आप जिस गांव में खेले होंगे, जिसकी मिट्टी या शहर की मिट्टी में जहां आपका बचपन का वह नटखटता किसी ना किसी प्रकार से समाज के उस या गांव के या शहर के उस चीज को आपने जहां बाधित किया होगा, बाधित करने का मतलब है बाधा के रूप में नहीं नटखटता के रूप में उस गांव की भी जिम्मेवारी आपके ऊपर है। जिस राज्य में है आप उसके लिए अपनी व्यवस्था में है राज्य की और देश की तो राज्य की भी जिम्मेवारी आप पर है और देश की जिम्मेवारी तो है ही।

हमारे जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता है कि हम जिस भारत मां की आंचल के शीतलता में, जिसके जल से, जिसकी भूमि से उत्पादित अन्न से और हम भारत के एक सपूत पुत्र पुत्री होने के नाते हमारे ऊपर जिम्मेवारी है। देश सर्वप्रथम, हमारे प्रधानमंत्री जी कहे, लेकिन सर्वप्रथम, सर्वोच्च तो है ही लेकिन आपको जिम्मेवारी अपने परिवार से लेकर देश तक आपको निभानी है।

और भाइयों, बहनों यह तभी सार्थक है जब हम समाज की समस्याओं के समाधान के लिए आगे बढ़े, चाहे वह कोई भी क्षेत्र हो। पर्यावरण पर भी हम सबको ध्यान देना पड़ेगा। मैं अपनी वाणी को समाप्त करने से पहले जरूर एक दो बातों को याद कराना चाहूंगा। हमारी पीढ़ी, विकासशील भारत की पीढ़ी, हमारे पीढ़ी ने गुलामी देखी है, पहले की पीढ़ियों ने, हमारे पूर्वजों ने इस देश का विभाजन देखा है।इस देश ने गरीबी देखी है, इस देश ने संघर्ष देखा है, यहां के ऋषि मुनियों से लेकर देशवासियों ने अपमान सहा है।विवेकानंद जी की एक पंक्ति को याद कर, भविष्यवाणी को याद कर, हम बात को समाप्त करेंगे।

विवेकानंद जी जब विदेश में गए थे तो उनसे किसी ने प्रश्न किया था कि आप तो उस देश के सन्यासी हो जो देश भूखा है, जो देश गुलाम है, जो देश के लोग बेघर हैं, बेबस है, अशिक्षित है। विवेकानंद जी ने कहा था कि मैं 21वीं सदी का भारत देख रहा हूं। 21वीं सदी भारत का होगा और भारत में ना कोई बेबस, अशिक्षित, बेघर और ना कोई भूखा होगा। विवेकानंद ने भविष्यवाणी की थी, 21वीं सदी है। विवेकानंद जी के बचपन का नाम नरेंद्र और आज कर्मयोगी प्रधानमंत्री का नाम भी नरेंद्र।एक नरेंद्र ने भविष्यवाणी की थी। दूसरा नरेंद्र के नेतृत्व में भारत के 140 करोड़ देशवासी और आप जैसे सामर्थ्यवान आईआईटी से शिक्षा ग्रहण करने वाले भाइयों बहनों 2047 के विकसित भारत के प्रधानमंत्री के संकल्प को पूरा करने के लिए जीना पड़ेगा।

जो वैसा भारत होगा, जो सामर्थ्यवान, शक्तिमान होगा, वैसा भारत होगा, जो विश्व गुरु बना हुआ भारत होगा, वैसा भारत होगा जिस भारत में प्रति व्यक्ति आए दुनिया में सबसे ज्यादा भारत के लोगों का होगा।
चलिए इस संकल्प और इस सपनों को सार्थक करने के लिए अपने जीवन को धन बनाइए।

बहुत-बहुत धन्यवाद!
बहुत-बहुत धन्यवाद!
भारत माता की जय!

*****